संपादक की कलम से.....

पिछले दिनों दो अच्छी खबरे सुनने को मिलीं। दोनों खबरे उत्तर प्रदेश से थी। एक बेगम अख्तर अवार्ड की घोषणा और दूसरी लखनऊ स्थित कालका बिन्दादीन महाराज की ड्योढ़ी का पुनरूद्धार।

मल्लिका–ए–गजल बेगम अख्तर ने ठुमरी, दादरा और गजल को जिस रंग में और जिस अदा से पेश किया दुनिया उनकी दीवानी हो गई। जहाँ तक गजल की पंखुड़ियां खोलने की बात है उसके हर नाजुक अंग को आवाज का सही रंग देना उनकी अपनी ईजाद थी।

''इस दिल के धड़कने का कुछ तो है सबब आखिर,
या दर्द ने करवट ली या तुमने इधर देखा''

उत्तर प्रदेश सरकार ने दादरा, ठुमरी और गजल गायकी में विशेष योगदान देने वाले राज्य के कलाकारों को बेगम अख्तर अवार्ड से सम्मानित करने का फैसला किया है। चयनित कलाकार को पाँच लाख रूपये की राशि, शाल व प्रतीक चिन्ह भेंट किया जाएगा। इसी सिलसिले में इस वर्ष लखनऊ की जरीना बेगम को इस सम्मान से नवाजा गया है। जरीना बेगम काफी लम्बे समय से गरीबी और मुफलिसी में अपनी जिंदगी गुजार रही है। लेकिन आज भी उन्होंने संगीत का दामन नहीं छोड़ा। जरीना कहती है कि जिसने मुझे संगीत की दुनिया में ऊचाँइयों तक पहुँचाया, आज उसी हस्ती के अवार्ड से जुड़कर बहुत खुशी महसूस करती हूँ।

इसके अतिरिक्त लखनऊ के गोलागंज के झाऊलाल पुल के पास स्थित कालका बिन्दादीन महाराज की डयोढ़ी का पुनरूद्धार संगीत जगत विशेषकर कथक समाज को राहत और खुशी देने वाली खबर है। पं0 बिरजू महाराज का बचपन यहीं बीता। काफी लम्बे समय से जर्जर पड़ी इस ड्योढ़ी के पुनरूद्धार के लिए उत्तर प्रदेश के संस्कृति विभाग ने रूचि दिखाई और इस कार्य के लिए 96 लाख रूपये आवंटित किए। इसका निर्माण एक वर्ष में पूरा होना है।

दुनिया को कथक नृत्य देने वाला शहर लखनऊ और उसे समृद्ध कर दुनिया में स्थान दिलाने का श्रेय इसी डयोढ़ी को जाता है। पं0 बिरजू महाराज ने ख्वाहिश जाहिर की कि डयोढ़ी के पुनस्द्धार के बाद वह वहाँ कथक की शिक्षा आरम्भ करना चाहते है ताकि विरासत जो उन्होने अपने बुजुर्गो से सीखी, उसे नई पीढी को सौंप सके।

हमारी सांस्कृतिक विरासत हमें अपने स्वर्णिम अतीत की याद दिलाती है। उस पर गर्व करना सिखाती है, इसलिए उसका संरक्षण और संवर्धन जरूरी होता है। कालका बिन्दादीन महाराज की डयोढ़ी का पुनरूद्धार और बेगम अख्तर अवार्ड की घोषणा इस दिशा में उठाया गया एक सराहनीय कदम है।

धन्यवाद